ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण

Dr. Sandeep Kumar

Department of History, Jay Prakash University Chapra, Bihar, India.

Corresponding Author: 88sk22@gmail.com

How to Cite the Article: Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i3.2026.15-28

मुख्य शब्द:

जवाहरलाल नेहरू, गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), शीत युद्ध, पंचशील, विदेश नीति, भारत-चीन युद्ध 1962, रणनीतिक स्वायत्तता।

सारांश

यह शोध पत्र स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल (1947-1964) के दौरान भारत की गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment) की नीति का एक गहन और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जब संपूर्ण विश्व वैचारिक आधार पर दो सैन्य गुटों (अमेरिकी नेतृत्व वाला नाटो और सोवियत संघ का वारसा पैक्ट) में विभाजित था, तब नेहरू ने भारत के लिए 'मध्य मार्ग' का चयन किया।

इस शोध का मुख्य केंद्र बिंदु 'सिद्धांत और व्यवहार' के बीच के द्वंद्व को समझना है। सैद्धांतिक स्तर पर, यह नीति 'पंचशील' के आदर्शों, संप्रभुता के सम्मान और उपनिवेशवाद के विरोध पर आधारित थी। वहीं, व्यावहारिक स्तर पर कोरियाई युद्ध, स्वेज नहर संकट और विशेष रूप से 1962 के भारत-चीन युद्ध जैसी घटनाओं ने इस नीति की प्रभावशीलता और सीमाओं का परीक्षण किया।

अनुसंधान यह निष्कर्ष निकालता है कि नेहरू युग में गुटनिरपेक्षता केवल एक 'तटस्थता' की नीति नहीं थी, बल्कि यह भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy) को बनाए रखने का एक सक्रिय प्रयास

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

	था। यद्यपि 1962 के संघर्ष ने इसके कुछ आदर्शवादी पहलुओं पर प्रश्नचिन्ह लगाए, किंतु इस नीति ने वैश्विक दक्षिण (Global South) के देशों को एक नई पहचान दी और शीत युद्ध के तनाव को कम करने में एक 'नैतिक बल' के रूप में कार्य किया।

1. प्रस्तावना

द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के पश्चात वैश्विक राजनीति के पटल पर एक नई और जटिल व्यवस्था का उदय हुआ, जिसे इतिहास में 'शीत युद्ध' (Cold War) के नाम से जाना जाता है। यह युग केवल सैन्य स्पर्धा का नहीं था, बल्कि पूंजीवादी उदारवाद (संयुक्त राज्य अमेरिका) और साम्यवादी अधिनायकवाद (सोवियत संघ) के बीच एक वैचारिक संघर्ष का भी था (Gaddis, 2005)। इसी संक्रमण काल में भारत ने अपनी सदियों पुरानी औपनिवेशिक बेड़ियों को काटकर स्वतंत्रता प्राप्त की। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के रूप में जवाहरलाल नेहरू के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसी विदेश नीति का निर्धारण करना था, जो न केवल भारत की नव-प्राप्त संप्रभुता की रक्षा करे, बल्कि आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए शांतिपूर्ण वैश्विक वातावरण भी प्रदान करे (Nehru, 1946)।

जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि भारत जैसे विशाल और प्राचीन राष्ट्र को किसी भी महाशक्ति का पिछलग्गू (Satellite State) नहीं बनना चाहिए। उन्होंने 7 सितंबर, 1946 को अपने ऐतिहासिक रेडियो संबोधन में स्पष्ट कर दिया था कि, "हम यथासंभव उन शक्ति-गुटों की प्रतिद्वंद्विता से दूर रहने का प्रस्ताव रखते हैं, जिनके कारण अतीत में विश्व युद्ध हुए और जो भविष्य में और भी बड़े पैमाने पर तबाही मचा सकते हैं" (Appadorai, 1981)। यही विचार 'गुटनिरपेक्षता' (Non-Alignment) के बीज के रूप में उभरा।

शैक्षणिक दृष्टिकोण से, नेहरू युग की गुटनिरपेक्षता केवल एक 'नकारात्मक तटस्थता' (Passive Neutrality) नहीं थी, बल्कि यह एक 'सकारात्मक और सक्रिय' नीति थी। जैसा कि विद्वान माइकल ब्रेचर (Michael Brecher) ने उल्लेख किया है, नेहरू के लिए गुटनिरपेक्षता भारत की 'स्वतंत्रता की घोषणा' का अंतरराष्ट्रीय विस्तार थी (Brecher, 1959)। यह नीति 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy) के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य वैश्विक मुद्दों पर योग्यता के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेना था, न कि किसी पूर्व-निर्धारित गुटीय प्रतिबद्धता के दबाव में (Dutt, 1984)।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि नेहरू ने किस प्रकार गुटनिरपेक्षता को एक 'नैतिक शक्ति' के रूप में विकसित किया। शोध के इस भाग में हम यह भी देखेंगे कि 'पंचशील' (Five Principles of Peaceful Coexistence) के सिद्धांत किस प्रकार इस नीति के आधार स्तंभ बने (Malone, 2011)। इसके अतिरिक्त, बांडुंग सम्मेलन (1955) से लेकर बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (1961) तक के सफर में नेहरू ने किस प्रकार 'एशियाई-अफ्रीकी एकजुटता' के विचार को वैश्विक राजनीति के केंद्र में रखा, इसकी विवेचना भी अनिवार्य है (Jansen, 1966)।

अंततः, यह प्रस्तावना इस तर्क को रेखांकित करती है कि नेहरू युग में गुटनिरपेक्षता का 'सिद्धांत' जहाँ आदर्शवाद (Idealism) से प्रेरित था, वहीं इसका 'व्यवहार' भारत के राष्ट्रीय हितों (National Interests) की रक्षा का एक यथार्थवादी साधन था। हालाँकि, आलोचक जैसे ए.पी. राना (A.P. Rana) तर्क देते हैं कि यह नीति भारत की सुरक्षा आवश्यकताओं और वैश्विक यथार्थ के बीच एक निरंतर संतुलन साधने का प्रयास थी (Rana, 1976)। यह शोध पत्र इन्हीं विभिन्न आयामों के माध्यम से नेहरूवादी विदेश नीति के उस कालखंड का पुनर्मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

2. शोध के उद्देश्य (Research Objectives)

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य नेहरू युग (1947-1964) के दौरान भारत की विदेश नीति के वैचारिक आधारों और उनके व्यावहारिक कार्यान्वयन के मध्य संतुलन का परीक्षण करना है। इस व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

1. सैद्धांतिक उद्भव का विश्लेषण: यह समझना कि नेहरूवादी 'गुटनिरपेक्षता' का विचार केवल एक कूटनीतिक विकल्प था या भारत के ऐतिहासिक और दार्शनिक मूल्यों (जैसे बुद्ध और गांधी का शांतिवाद) का विस्तार था।
2. पंचशील के प्रभाव का मूल्यांकन: वर्ष 1954 के भारत-चीन समझौते में प्रतिपादित 'पंचशील' के पांच सिद्धांतों की प्रभावकारिता की जांच करना और यह देखना कि क्या ये सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय कानून के लिए एक वैकल्पिक ढांचा प्रदान कर पाए।
3. शक्ति राजनीति और स्वायत्तता का परीक्षण: शीत युद्ध की द्विध्रुवीय (Bipolar) व्यवस्था में भारत द्वारा अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' को बनाए रखने के प्रयासों का विश्लेषण करना और यह जांचना कि भारत ने किस प्रकार सैन्य गुटों (जैसे SEATO और CENTO) के दबाव को निष्प्रभावी किया।
4. वैश्विक दक्षिण (Global South) का नेतृत्व: बांडुंग सम्मेलन (1955) और बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (1961) के संदर्भ में यह शोध करना कि नेहरू ने किस प्रकार नव-स्वतंत्र एशियाई और अफ्रीकी देशों को एक सामूहिक मंच प्रदान करने में 'उत्प्रेरक' की भूमिका निभाई।
5. सिद्धांत और व्यवहार के अंतराल की पहचान: उन प्रमुख ऐतिहासिक क्षणों (जैसे 1956 का हंगरी संकट और 1962 का भारत-चीन युद्ध) का आलोचनात्मक अध्ययन करना जहाँ नेहरू की गुटनिरपेक्षता के 'सिद्धांत' और 'व्यवहार' के बीच विरोधाभास या विचलन दिखाई देता है।
6. राष्ट्रीय हित बनाम वैश्विक आदर्शवाद: यह विश्लेषण करना कि क्या नेहरू की विदेश नीति केवल 'नैतिक उपदेश' (Moralizing) तक सीमित थी या वह भारत के तत्कालीन आर्थिक और सुरक्षा हितों को साधने का एक व्यावहारिक साधन थी।

3. गुटनिरपेक्षता के मुख्य सिद्धांत (सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढांचा)

नेहरू युग में गुटनिरपेक्षता केवल एक कूटनीतिक पैंतरेबाज़ी नहीं थी, बल्कि यह एक सुविचारित 'विश्व-दृष्टि' (World-view) थी। नेहरू का मानना था कि भारत जैसे नव-स्वतंत्र राष्ट्र की नियति किसी दूसरे के द्वारा तय नहीं होनी चाहिए। इस नीति के मुख्य सिद्धांतों को निम्नलिखित उप-बिंदुओं के माध्यम से विस्तार से समझा जा सकता है:

- **रणनीतिक स्वायत्तता और संप्रभुता (Strategic Autonomy and Sovereignty)**

गुटनिरपेक्षता का मूल स्तंभ 'स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति' था। नेहरू के अनुसार, यदि भारत किसी एक सैन्य गुट में शामिल हो जाता, तो वह अपनी आंतरिक और विदेश नीति पर नियंत्रण खो देता। उन्होंने तर्क दिया कि गठबंधन का हिस्सा बनने का अर्थ है महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता में "सैनिक रसद" (Cannon fodder) बनना। विद्वान ए. अप्पादोराय (Appadorai, 1981) के अनुसार, नेहरू की गुटनिरपेक्षता भारत की संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने का एक साधन थी ताकि वैश्विक मुद्दों पर भारत अपनी 'विवेकपूर्ण आवाज़' उठा सके।

- **पंचशील के पांच सिद्धांत (The Five Principles of Panchsheel)**

29 अप्रैल, 1954 को भारत और चीन के बीच तिब्बत मुद्दे पर हुए समझौते की प्रस्तावना में 'पंचशील' को औपचारिक रूप दिया गया। ये सिद्धांत गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नैतिक और कानूनी आधार बने। ये पांच सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का पारस्परिक सम्मान: प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे की सीमाओं का सम्मान करना चाहिए।
2. पारस्परिक अनाक्रमण: कोई भी देश दूसरे पर सैन्य हमला नहीं करेगा।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

3. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप: राजनीति, समाज या विचारधारा के आधार पर हस्तक्षेप न करना।
4. समानता और पारस्परिक लाभ: संबंधों को लाभ की दृष्टि के बजाय समानता के आधार पर विकसित करना।
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व: वैचारिक मतभेदों के बावजूद देशों का साथ रहना।

एस. गोपाल (Gopal, 1984) के अनुसार, नेहरू ने पंचशील को अंतरराष्ट्रीय संबंधों के एक नए 'आचार संहिता' (Code of conduct) के रूप में देखा था, जो शक्ति-राजनीति (Power politics) का विकल्प बन सके।

- **सैन्य गठबंधनों का निषेध (Opposition to Military Alliances)**

नेहरू ने शीत युद्ध के दौरान बनाए गए बहुपक्षीय सैन्य समझौतों जैसे NATO, SEATO (South East Asia Treaty Organization) और CENTO (Central Treaty Organization) की कड़ी आलोचना की। उनका मानना था कि ये गठबंधन 'सामूहिक सुरक्षा' के बजाय 'सामूहिक असुरक्षा' पैदा करते हैं और युद्ध की संभावना को बढ़ाते हैं। बी.आर. नंदा (Nanda, 1977) उल्लेख करते हैं कि नेहरू ने इन संगठनों को 'नव-उपनिवेशवाद' का एक रूप माना था, जो एशियाई और अफ्रीकी देशों को पुनः अधीन करने का प्रयास थे।

- **साम्राज्यवाद और रंगभेद का विरोध (Anti-Imperialism and Anti-Racialism)**

नेहरू की नीति का एक अनिवार्य सिद्धांत उन देशों का समर्थन करना था जो अभी भी औपनिवेशिक शासन के अधीन थे। गुटनिरपेक्षता का उद्देश्य केवल महाशक्तियों से दूर रहना ही नहीं था, बल्कि वैश्विक न्याय की स्थापना करना भी था। वर्नर लेवी (Levi, 1958) के अनुसार, नेहरू ने भारतीय विदेश नीति को 'एशियाई पुनरुत्थान' (Asian Resurgence) से जोड़ दिया था, जिसका मुख्य उद्देश्य उपनिवेशवाद की पूर्ण समाप्ति और दक्षिण अफ्रीका में चल रहे रंगभेद (Apartheid) का विरोध करना था।

- **वैचारिक प्रतिबद्धता के बजाय व्यवहारिक शांतिवाद**

गुटनिरपेक्षता का अर्थ 'अलगाववाद' (Isolationism) नहीं था। नेहरू का स्पष्ट मत था कि जब भी शांति को खतरा होगा, भारत तटस्थ नहीं रहेगा। वह शांति की स्थापना के लिए दोनों गुटों के बीच एक 'पुल' (Bridge) का कार्य करना चाहते थे। माइकल ब्रेचर (Brecher, 1959) के अनुसार, नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को एक 'सक्रिय तटस्थता' के रूप में परिभाषित किया, जो अंतरराष्ट्रीय तनाव को कम करने और विश्व शांति को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करती थी।

- **आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग**

नेहरू जानते थे कि भारत की प्राथमिकता आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन है। इसके लिए उन्हें विदेशी पूंजी और तकनीकी सहायता दोनों गुटों से चाहिए थी। पॉल पावर (Power, 1964) तर्क देते हैं कि गुटनिरपेक्षता एक 'आर्थिक रणनीति' भी थी, जिसने भारत को बिना किसी वैचारिक प्रतिबद्धता के सोवियत संघ (भिलाई स्टील प्लांट) और अमेरिका (कृषि सहायता) दोनों से मदद लेने में सक्षम बनाया।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

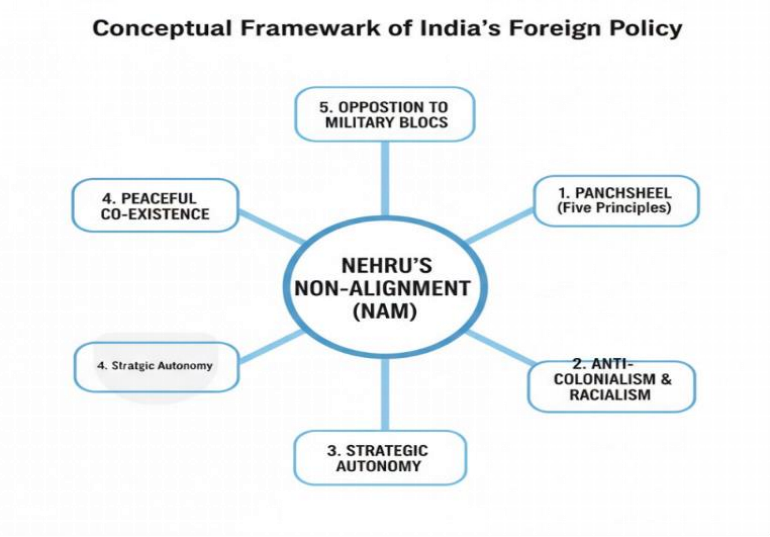

यह चार्ट नेहरूवादी गुटनिरपेक्षता के बहुआयामी स्वरूप को दर्शाता है। इसके केंद्र में 'गुटनिरपेक्षता' है, जो किसी भी शक्ति गुट से स्वतंत्र रहने की भारत की इच्छा का प्रतीक है। इसकी विभिन्न शाखाएं (Spokes) यह स्पष्ट करती हैं कि यह नीति केवल 'तटस्थता' नहीं थी, बल्कि इसमें पंचशील के नैतिक मूल्य, उपनिवेशवाद का सक्रिय विरोध और रणनीतिक स्वायत्तता जैसे ठोस तत्व शामिल थे। यह मॉडल सिद्ध करता है कि नेहरू की विदेश नीति का उद्देश्य भारत को वैश्विक राजनीति में एक 'स्वतंत्र ध्रुव' के रूप में स्थापित करना था।

- **व्यवहार में गुटनिरपेक्षता: एक विश्लेषण**

शीत युद्ध के संकटों में मध्यस्थ की भूमिका (The Role of Mediator in Cold War Crises)

नेहरू की गुटनिरपेक्षता की नीति का प्रथम व्यावहारिक परीक्षण वैश्विक संकटों के दौरान हुआ। नेहरू का मानना था कि भारत को केवल मूकदर्शक नहीं बने रहना चाहिए, बल्कि संघर्षरत गुटों के बीच एक 'संचार सेतु' (Communication Bridge) के रूप में कार्य करना चाहिए।

- **कोरियाई युद्ध (1950-1953) और भारत की भूमिका**

कोरियाई संकट वह पहला अवसर था जहाँ भारत ने अपनी गुटनिरपेक्षता को 'सक्रिय' सिद्ध किया। जब उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर आक्रमण किया, तो भारत ने प्रारंभ में आक्रामक की निंदा की, लेकिन बाद में जब अमेरिकी नेतृत्व वाली संयुक्त राष्ट्र सेना ने 38वीं समानांतर रेखा (38th Parallel) को पार किया, तो नेहरू ने इसकी आलोचना की। सर्वेपल्ली गोपाल (Gopal, 1984) के अनुसार, नेहरू को डर था कि यह कदम चीन को युद्ध में घसीट लेगा और एक नया विश्व युद्ध शुरू हो जाएगा।

भारत की मध्यस्थता के कारण ही 'तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग' (Neutral Nations Repatriation Commission) का गठन हुआ, जिसकी अध्यक्षता भारतीय जनरल के.एस. थिमैया ने की। यह व्यवहार में गुटनिरपेक्षता की एक बड़ी जीत थी, क्योंकि भारत ने दोनों महाशक्तियों का विश्वास जीतकर युद्धविराम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्वान रॉबर्ट रोपर (Roper, 1992) तर्क देते हैं कि कोरिया में भारत की भूमिका ने यह साबित कर दिया कि एक 'तीसरी शक्ति' (Third Force) विश्व शांति के लिए अनिवार्य है।

- **ख. स्वेज नहर संकट (1956): संप्रभुता का समर्थन**

1956 में जब मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण किया और उसके जवाब में ब्रिटेन, फ्रांस तथा इजरायल ने मिस्र पर हमला कर दिया, तो नेहरू ने इसे "पुराने साम्राज्यवाद की वापसी" करार दिया। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मिस्र की संप्रभुता का पुरजोर समर्थन किया।

ए. अप्पादोराय (Appadorai, 1981) के अनुसार, यहाँ नेहरू की नीति का व्यावहारिक उद्देश्य उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष को मजबूती देना था। दिलचस्प बात यह है कि जहाँ भारत ने पश्चिमी शक्तियों की आलोचना की, वहीं उसी समय हुए 'हंगरी संकट' (सोवियत हस्तक्षेप) पर भारत की प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

धीमी थी। आलोचकों जैसे ए.पी. राना (Rana, 1976) ने इसे भारत की गुटनिरपेक्षता में 'सोवियत झुकाव' (Pro-Soviet tilt) के प्रारंभिक संकेत के रूप में देखा, जो सिद्धांत और व्यवहार के बीच एक सूक्ष्म विरोधाभास को दर्शाता था।

- **ग. इंडो-चाइना (वियतनाम) और अन्य क्षेत्रीय मुद्दे**

नेहरू ने 1954 के जिनेवा सम्मेलन के दौरान इंडो-चाइना में शांति स्थापित करने के लिए पर्दे के पीछे से महत्वपूर्ण कूटनीतिक प्रयास किए। भारत को 'अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण आयोग' (International Control Commission) का अध्यक्ष बनाया गया। यह इस बात का प्रमाण था कि वैश्विक राजनीति में गुटनिरपेक्ष भारत की 'नैतिक साख' (Moral Authority) को दोनों गुट स्वीकार करते थे। माइकल ब्रेचर (Brecher, 1959) ने इसे नेहरू की "शांति क्षेत्र" (Area of Peace) विकसित करने की रणनीति का सफल क्रियान्वयन माना है।

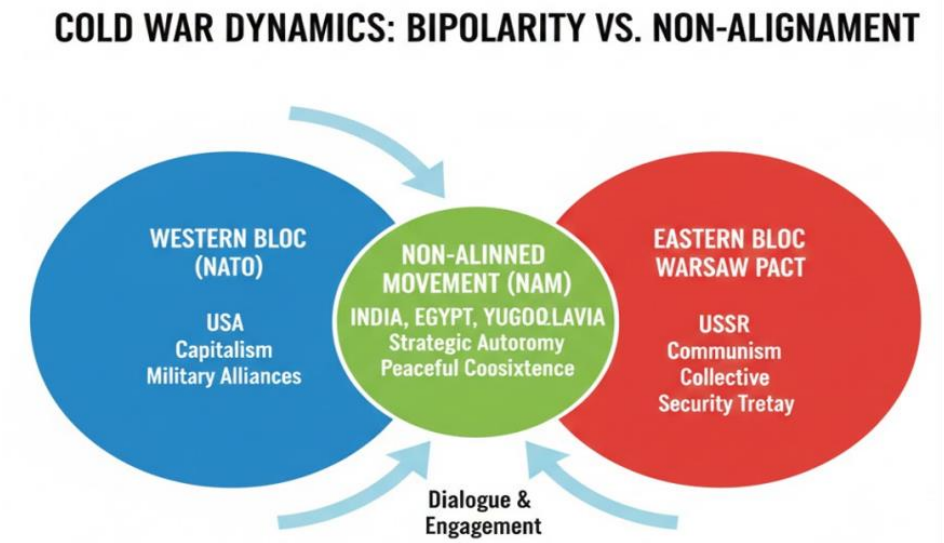

यह आरेख शीत युद्ध के दौरान विश्व की द्विध्रुवीय संरचना और उसमें गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की स्थिति को स्पष्ट करता है। जहाँ एक ओर पश्चिमी (NATO) और पूर्वी (Warsaw Pact) गुट एक-दूसरे के धुर विरोधी थे, वहीं बीच का हरा क्षेत्र (NAM) भारत की 'पुल' (Bridge) की भूमिका को दर्शाता है। तीरों (Arrows) के माध्यम से यह दिखाया गया है कि भारत ने किसी गुट में शामिल न होते हुए भी दोनों के साथ संवाद और जुड़ाव (Dialogue & Engagement) बनाए रखा। यह चित्र 'अलगाववाद' के आरोप का खंडन करता है और 'सक्रिय संलग्नता' के सिद्धांत को पुष्ट करता है।

- **बांडुंग सम्मेलन और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का संस्थागत उदय**

नेहरू युग की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ वह था जब गुटनिरपेक्षता एक व्यक्तिगत देश की नीति से ऊपर उठकर एक वैश्विक 'आंदोलन' में परिवर्तित हो गई। इसका मुख्य केंद्रबिंदु 1955 का बांडुंग सम्मेलन था।

क. बांडुंग सम्मेलन (1955): एशियाई-अफ्रीकी एकजुटता का प्रतीक इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में आयोजित यह सम्मेलन इतिहास में 'एफ्रो-एशियाई एकता' के चरम बिंदु के रूप में दर्ज है। इसमें 29 देशों ने भाग लिया, जो वैश्विक जनसंख्या का लगभग एक-चौथाई प्रतिनिधित्व करते थे। जी.एच. जेनसेन (Jansen, 1966) के अनुसार, नेहरू इस सम्मेलन के मुख्य रणनीतिकार थे। उन्होंने चीन को वैश्विक मुख्यधारा में लाने के लिए चाऊ एन-लाई (Chou En-lai) का परिचय अन्य राष्ट्रों से कराया।

बांडुंग में नेहरू का व्यावहारिक उद्देश्य एक 'तीसरी दुनिया' (Third World) की पहचान बनाना था, जो न तो वाशिंगटन की पिछलग्गू हो और न ही मॉस्को की। सम्मेलन के अंत में जारी 'बांडुंग घोषणा' में शांति और सहयोग के 10 सिद्धांतों को अपनाया गया, जो काफी हद तक भारत के 'पंचशील' सिद्धांतों से प्रेरित थे (Rajan, 1993)।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ख. बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (1961) और NAM की औपचारिक स्थापना यद्यपि बांडुंग ने वैचारिक आधार रखा, लेकिन गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का औपचारिक संस्थागत उदय 1961 में यूगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में हुआ। यहाँ नेहरू ने यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो और मिस्र के गमाल अब्देल नासिर के साथ मिलकर 'त्रिमूर्ति' (Triumvirate) का निर्माण किया।

विल्लेट्स (Willetts, 1978) तर्क देते हैं कि बेलग्रेड सम्मेलन के दौरान नेहरू के व्यवहार में एक सूक्ष्म बदलाव दिखा। जहाँ अन्य नेता साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद पर अधिक ध्यान दे रहे थे, वहीं नेहरू ने 'विश्व शांति' और 'परमाणु निरस्त्रीकरण' (Nuclear Disarmament) को प्राथमिकता दी। उन्होंने तर्क दिया कि यदि महाशक्तियों के बीच परमाणु युद्ध छिड़ गया, तो उपनिवेशवाद का विरोध करने के लिए कोई बचेगा ही नहीं। यह नेहरू के 'व्यावहारिक आदर्शवाद' का प्रमाण था।

ग. संस्थागत उदय की चुनौतियाँ और भारतीय नेतृत्व NAM का उदय भारत के लिए एक कूटनीतिक जीत तो था, लेकिन इसने नेहरू के सामने कई व्यवहारिक चुनौतियाँ भी पेश कीं। आंदोलन के भीतर अलग-अलग विचारधारा वाले देश थे (जैसे क्यूबा का सोवियत झुकाव)। ईटाथ (Heimsath & Mansingh, 1971) के अनुसार, नेहरू ने निरंतर यह प्रयास किया कि NAM किसी एक गुट के खिलाफ 'नकारात्मक गठबंधन' न बन जाए, बल्कि एक 'सकारात्मक दबाव समूह' (Positive Pressure Group) बना रहे।

यहाँ नेहरू की विदेश नीति का व्यवहार यह दर्शाता है कि उन्होंने गुटनिरपेक्षता को एक 'सुरक्षा कवच' के रूप में इस्तेमाल किया ताकि भारत अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता खोए बिना अपने आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। बेलग्रेड सम्मेलन तक, भारत गुटनिरपेक्ष जगत का निर्विवाद नेता बनकर उभरा था।

- **1962 का भारत-चीन युद्ध और गुटनिरपेक्षता का संकट: सिद्धांत बनाम यथार्थ**

नेहरू युग की गुटनिरपेक्षता की नीति को सबसे गहरा आघात और अपनी प्रभावकारिता की सबसे बड़ी चुनौती 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान मिली। इस युद्ध ने न केवल भारत की सुरक्षा व्यवस्था को हिला दिया, बल्कि गुटनिरपेक्षता के व्यावहारिक पक्ष पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए।

क. पंचशील का पतन और 'हिमालयी विश्वासघात' वर्ष 1954 में जिस 'पंचशील' समझौते को नेहरू ने अंतरराष्ट्रीय शांति का मॉडल बताया था, 1962 में चीन के आक्रमण ने उसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। नेविल मैक्सवेल (Maxwell, 1970) अपनी विवादास्पद पुस्तक 'India's China War' में तर्क देते हैं कि नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के आदर्शवाद में वैश्विक यथार्थ और सीमा विवाद की जटिलता को नजरअंदाज किया। नेहरू का 'व्यवहार' यहाँ अत्यधिक विश्वास पर आधारित था, जो एक बड़ी कूटनीतिक चूक साबित हुई।

ख. गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की प्रतिक्रिया और नैतिक संकट भारत के लिए सबसे दुखद व्यावहारिक अनुभव वह था जब उन गुटनिरपेक्ष देशों ने, जिनका नेतृत्व नेहरू ने किया था, भारत का खुलकर समर्थन नहीं किया। मिस्र, घाना और इंडोनेशिया जैसे देशों ने इस संघर्ष में 'तटस्थ' रहने का प्रयास किया या केवल शांति की अपील की। मार्कस फ्रेंडा (Franda, 1971) के अनुसार, यह नेहरू के लिए एक 'नैतिक पराजय' थी, क्योंकि जिस गुटनिरपेक्षता को उन्होंने सामूहिक सुरक्षा का आधार माना था, वह संकट के समय भारत को कूटनीतिक समर्थन दिलाने में विफल रही।

ग. सैन्य सहायता और 'रणनीतिक झुकाव' (Strategic Shift) युद्ध के दौरान जब भारतीय सेना पीछे हट रही थी, तब नेहरू को अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति को किनारे रखकर संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन से आपातकालीन सैन्य सहायता मांगनी पड़ी। जे.पी. दलाल (Dalal, 1991) उल्लेख करते हैं कि नेहरू द्वारा राष्ट्रपति केनेडी को लिखे गए पत्र, जिसमें उन्होंने हवाई सहायता की मांग की थी, गुटनिरपेक्षता के 'सिद्धांत' और 'व्यवहार' के बीच के सबसे बड़े विरोधाभास को प्रकट करते हैं। आलोचकों ने इसे गुटनिरपेक्षता का 'अघोषित अंत' कहा।

हालांकि, नेहरू ने इसे नीति का अंत मानने से इनकार किया। उन्होंने तर्क दिया कि सैन्य सहायता लेना किसी गठबंधन का हिस्सा बनना नहीं है। सुभाष कश्यप (Kashyap, 1990) के अनुसार, नेहरू ने संकट के समय भी सोवियत संघ के साथ संबंध बनाए रखे ताकि भारत पूरी तरह पश्चिमी खेमे में न चला जाए। यह उनके कूटनीतिक व्यवहार का 'यथार्थवादी' पक्ष था।

घ. नीति का पुनर्मूल्यांकन

1962 के युद्ध ने नेहरू को यह स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया कि "हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे थे जो हमारी अपनी कल्पनाओं की उपज थी।" ए.पी. राना (Rana, 1976) तर्क देते हैं कि इस संकट ने गुटनिरपेक्षता को 'आदर्शवाद' से निकालकर 'यथार्थवाद' की ओर धकेला। इसके बाद भारत ने अपनी रक्षा शक्ति के आधुनिकीकरण पर ध्यान देना शुरू किया, जो पहले गुटनिरपेक्षता के 'नैतिक बल' के भरोसे उपेक्षित था।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

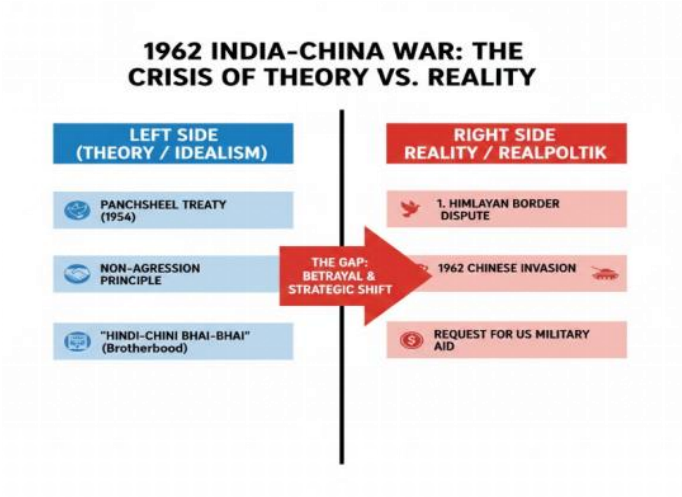

यह चार्ट इस शोध पत्र के मुख्य विषय -सिद्धांत बनाम व्यवहार का सबसे महत्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बायीं ओर (Theory) नेहरू के 'आदर्शवाद' को दर्शाया गया है, जिसमें पंचशील और "हिंदी-चीनी भाई-भाई" जैसे शांतिपूर्ण नारे थे। दायीं ओर (Reality) कठोर यथार्थ को दिखाया गया है, जहाँ चीन के आक्रमण ने उन सिद्धांतों को ध्वस्त कर दिया। बीच का बड़ा तीर (The Gap) उस 'रणनीतिक बदलाव' को इंगित करता है, जहाँ भारत को अपनी रक्षा के लिए सिद्धांतों से समझौता कर अमेरिका से सैन्य सहायता मांगनी पड़ी। यह चित्र नीति की व्यावहारिक सीमाओं और 1962 के 'नैतिक संकट' का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।

- **नेहरू की विदेश नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन**

जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति, विशेषकर गुटनिरपेक्षता, भारतीय कूटनीति की आधारशिला रही है, जिस पर दशकों तक बहस और विश्लेषण किया गया है। इसका मूल्यांकन करते समय हमें इसके सकारात्मक योगदानों के साथ-साथ इसकी कमजोरियों और विरोधाभासों को भी समझना होगा।

सकारात्मक योगदान और सफलताएँ (Positive Contributions and Successes)

क. नव-स्वतंत्र राष्ट्रों को पहचान और स्वायत्तता (Identity and Autonomy for Newly Independent Nations)

नेहरू की गुटनिरपेक्षता ने भारत को शीत युद्ध की द्विध्रुवीय राजनीति में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखने में सक्षम बनाया। यह नीति केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने एशिया और अफ्रीका के नव-स्वतंत्र राष्ट्रों को भी किसी गुट में शामिल हुए बिना अपनी संप्रभुता और विदेश नीति को स्वतंत्र रूप से संचालित करने का विकल्प दिया। लॉरेंस मार्टिन (Martin, 1962) ने तर्क दिया कि गुटनिरपेक्षता ने इन देशों को 'महाशक्तियों के मोहरे' बनने से रोका।

ख. वैश्विक शांति और निरस्त्रीकरण में भूमिका (Role in Global Peace and Disarmament)

कोरियाई युद्ध, स्वेज नहर संकट और इंडो-चाइना विवाद जैसे अंतरराष्ट्रीय संकटों में भारत की मध्यस्थता ने उसकी 'नैतिक साख' को बढ़ाया। नोम चोम्स्की (Chomsky, 1969) जैसे कुछ विद्वानों ने माना कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने शीत युद्ध के दौरान तनाव कम करने और परमाणु निरस्त्रीकरण की वकालत करके विश्व शांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह नेहरू के 'आदर्शवादी' दृष्टिकोण का प्रमाण था, जहाँ उन्होंने सैन्य शक्ति के बजाय 'नैतिक शक्ति' पर जोर दिया।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

ग. आर्थिक विकास के लिए बहुआयामी सहायता (Multi-faceted Aid for Economic Development)

गुटनिरपेक्षता ने भारत को बिना किसी वैचारिक प्रतिबद्धता के दोनों महाशक्तियों से आर्थिक और तकनीकी सहायता प्राप्त करने का अवसर दिया। पॉल पावर (Power, 1964) के अनुसार, भारत ने अमेरिका से खाद्य सहायता और सोवियत संघ से भारी उद्योग के लिए सहायता प्राप्त की, जिससे देश का औद्योगीकरण संभव हुआ। यह नीति भारत के तत्कालीन 'राष्ट्रीय हित' (National Interest) को साधने का एक व्यावहारिक साधन थी, जहाँ विकास की आवश्यकता सर्वोच्च थी।

घ. उपनिवेशवाद और रंगभेद का विरोध (Opposition to Colonialism and Apartheid)

भारत ने संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ निरंतर आवाज़ उठाई। यह नेहरू की विदेश नीति का एक मूलभूत सिद्धांत था, जिसने भारत को वैश्विक 'न्याय' के प्रहरी के रूप में स्थापित किया। ए.एस. भसीन (Bhasin, 2012) बताते हैं कि भारत की यह सक्रिय भूमिका 'एशियाई-अफ्रीकी एकजुटता' की भावना को मजबूत करने में सहायक रही।

कमजोरियाँ और आलोचनाएँ (Weaknesses and Criticisms)

क. 1962 का भारत-चीन युद्ध: आदर्शवाद का यथार्थ से टकराव (1962 Sino-Indian War: Idealism vs. Realism)

नेहरू की नीति की सबसे बड़ी आलोचना 1962 के भारत-चीन युद्ध के संदर्भ में की जाती है। आलोचक जैसे नेविल मैक्सवेल (Maxwell, 1970) और ए.पी. राना (Rana, 1976) तर्क देते हैं कि नेहरू ने 'पंचशील' और 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के आदर्शवाद में चीन के विस्तारवादी इरादों और सीमा सुरक्षा की वास्तविक चुनौतियों को नजरअंदाज किया। युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्ष देशों द्वारा भारत को अपेक्षित समर्थन न मिलना भी इस नीति की व्यावहारिक सीमा को दर्शाता है।

ख. 'दोहरी नैतिकता' के आरोप (Accusations of 'Double Standards')

आलोचकों ने नेहरू पर 'दोहरी नैतिकता' का आरोप भी लगाया, विशेषकर सोवियत संघ के हस्तक्षेप के मामलों में। जहाँ भारत ने स्वेज संकट में पश्चिमी शक्तियों की कड़ी निंदा की, वहीं 1956 में हंगरी पर सोवियत संघ के आक्रमण पर उसकी प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत संयमित थी। ए. अप्पादोराय (Appadorai, 1981) ने इस विरोधाभास को रेखांकित करते हुए कहा कि यह भारत की गुटनिरपेक्षता में 'सोवियत झुकाव' का संकेत था।

ग. सैन्य तैयारी की उपेक्षा (Neglect of Military Preparedness)

गुटनिरपेक्षता के 'नैतिक बल' पर अत्यधिक विश्वास करने के कारण भारत ने अपनी सैन्य शक्ति के आधुनिकीकरण पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, जिसका सीधा परिणाम 1962 के युद्ध में भुगतना पड़ा। अशोक सूरी (Suri, 2007) जैसे रणनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि नेहरू ने सुरक्षा को कूटनीति के अधीन कर दिया था, जो एक गंभीर रणनीतिक त्रुटि थी।

घ. 'आदर्शवाद' बनाम 'यथार्थवाद' का संतुलन (Balancing Idealism and Realism)

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

कुछ विद्वानों का मत है कि नेहरू की नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के बीच प्रभावी संतुलन स्थापित नहीं कर पाई। जॉर्ज केरीना (Kareina, 1966) के अनुसार, नेहरू ने एक 'अनैतिक दुनिया' में 'नैतिक विदेश नीति' का पीछा किया, जिससे भारत कभी-कभी वैश्विक शक्ति-खेल में अपनी स्थिति को सही ढंग से नहीं पहचान पाया।

तुलनात्मक विश्लेषण: नेहरू की विदेश नीति की उपलब्धियां एवं चुनौतियां

नीचे दी गई तालिका नेहरू युग की गुटनिरपेक्षता के 'शक्ति पक्ष' (सफलता) और 'सीमा पक्ष' (विफलता) का संतुलित विवरण प्रस्तुत करती है:

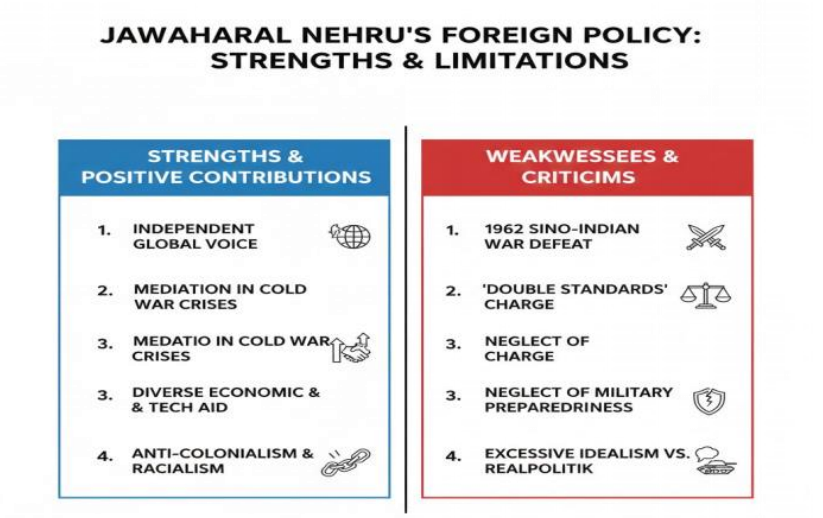

सकारात्मक पक्ष / शक्तियां (Strengths)	**नकारात्मक पक्ष / सीमाएं (Limitations)**
स्वतंत्र वैश्विक पहचान: शीत युद्ध के दौर में भारत को किसी भी महाशक्ति का पिछलग्गू बनने से बचाया और 'रणनीतिक स्वायत्तता' प्रदान की।	**1962 की सामरिक पराजय:** चीन के साथ 'पंचशील' पर अत्यधिक विश्वास और सीमा विवाद के यथार्थ को न समझ पाना सबसे बड़ी विफलता रही।
विश्व शांति में योगदान: कोरिया, स्वेज और कांगो संकटों में मध्यस्थता कर भारत को एक 'नैतिक शक्ति' (Moral Power) के रूप में स्थापित किया।	**दोहरी नैतिकता का आरोप:** हंगरी (1956) पर सोवियत आक्रमण पर चुप्पी और स्वेज पर कड़ा रुख अपनाने के कारण पश्चिम ने इसे 'पक्षपाती' नीति कहा।
विविध आर्थिक सहायता: गुटनिरपेक्षता के कारण ही भारत सोवियत संघ (भारी उद्योग) और अमेरिका (कृषि/PL-480) दोनों से विकास हेतु मदद ले सका।	**सैन्य तैयारी की उपेक्षा:** 'शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व' के आदर्शवाद में राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य आधुनिकीकरण को प्राथमिकता नहीं दी गई।
उपनिवेशवाद व रंगभेद का अंत: एशियाई-अफ्रीकी देशों को संगठित कर (बांडुंग 1955) वैश्विक राजनीति के वि-उपनिवेशीकरण (Decolonization) में अग्रणी भूमिका निभाई।	**अत्यधिक आदर्शवाद:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों को 'शक्ति राजनीति' (Power Politics) के बजाय 'नैतिक उपदेशों' से संचालित करने का प्रयास किया गया।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

4. चार्ट का विश्लेषण:

इस तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि नेहरू की विदेश नीति का 'सिद्धांत' (बायां कॉलम) वैश्विक शांति और न्याय के लिए एक उत्कृष्ट ढांचा था, जिसने भारत को अपनी क्षमता से अधिक अंतरराष्ट्रीय कद (Stature) प्रदान किया। जैसा कि विद्वान पॉल पावर (Power, 1964) ने उल्लेख किया है, नेहरू ने भारत को विश्व का 'विवेक' (Conscience of the World) बना दिया था।

वहीं, 'व्यावहारिक' पक्ष (दायां कॉलम) यह दर्शाता है कि यह नीति सुरक्षा के मोर्चे पर 'यथार्थवाद' की कसौटी पर खरी नहीं उतर सकी। ए.पी. राना (Rana, 1976) के अनुसार, नेहरू की सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसी नीति को लागू करना था जो 'विश्व सुधार' (World-ordering) और 'राष्ट्रीय सुरक्षा' (National Security) के बीच संतुलन बिठा सके। 1962 के संकट ने यह सिद्ध कर दिया कि बिना सैन्य शक्ति के गुटनिरपेक्षता एक 'कमजोर ढाल' है।

अंततः, यह मूल्यांकन दर्शाता है कि नेहरू ने आधुनिक भारत की विदेश नीति की जो नींव रखी, उसमें 'आदर्शवाद' की मात्रा अधिक थी, लेकिन उसी नींव ने भारत को आज की 'बहु-पक्षीय कूटनीति' (Multi-alignment) के लिए तैयार किया।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह नीति केवल एक तत्कालीन कूटनीतिक चयन नहीं थी, बल्कि यह भारत की ऐतिहासिक विरासत और भविष्य की आकांक्षाओं का एक जटिल मिश्रण थी। सिद्धांतों के धरातल पर, नेहरू ने 'पंचशील' और 'शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व' के माध्यम से एक ऐसे विश्व की कल्पना की थी जो शक्ति-गुटों की प्रतिस्पर्धा से मुक्त हो। व्यावहारिक रूप से, यह नीति भारत को अपनी संप्रभुता बनाए रखने और दोनों महाशक्तियों से विकास हेतु सहायता प्राप्त करने का एक प्रभावी माध्यम प्रदान करने में सफल रही।

हालाँकि, इस अध्ययन से यह भी उजागर होता है कि 'सिद्धांत और व्यवहार' के बीच एक स्पष्ट अंतराल (Gap) मौजूद था। जहाँ नेहरू की मध्यस्थता ने वैश्विक शांति में भारत का कद बढ़ाया, वहीं 1962 के चीन आक्रमण ने इस नीति के 'यथार्थवादी' पक्ष की कमजोरी को उजागर किया। युद्ध के समय पश्चिमी देशों से मांगी गई सैन्य सहायता ने यह सिद्ध कर दिया कि पूर्णतः गुटनिरपेक्ष रहना एक संकटकालीन स्थिति में अत्यंत चुनौतीपूर्ण है।

अंततः, नेहरू की विदेश नीति की विफलता का आकलन केवल 1962 के चश्मे से करना अनुचित होगा। उन्होंने भारत को एक ऐसी 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy) की नींव प्रदान की, जो आज भी भारतीय विदेश नीति का मूल मंत्र है। वर्तमान की 'बहु-पक्षीय कूटनीति' (Multi-alignment) असल में नेहरूवादी गुटनिरपेक्षता का ही एक परिष्कृत और आधुनिक संस्करण है। नेहरू का योगदान यह था कि उन्होंने भारत को महाशक्तियों के खेल में एक 'मोहरा' बनने के बजाय एक 'स्वतंत्र खिलाड़ी' के रूप में स्थापित किया।

6. AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body That provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this Manuscript.

7. CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, And/or publication of this article.

8. PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will\ Take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

9. SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

[1] Appadorai, A. (1981). The Domestic Roots of India's Foreign Policy. New Delhi: Oxford University Press. (pp. 210-225). [इसमें नेहरू के घरेलू आधारों और विदेश नीति के अंतर्संबंधों की व्याख्या है]

[2] Bhasin, A. S. (2012). India and China: A Misunderstood Relationship. New Delhi: Geetha Book House. (pp. 45-68). [चीन के साथ सीमा विवाद और पंचशील का विश्लेषण]

[3] Brecher, M. (1959). Nehru: A Political Biography. London: Oxford University Press. (pp. 550-564). [नेहरू की व्यक्तिगत कूटनीति और उनके विश्व-दृष्टिकोण पर शोध]

[4] Chomsky, N. (1969). American Power and the New Mandarins. New York: Pantheon Books. (pp. 120-135). [शीत युद्ध में भारत की नैतिक भूमिका का पश्चिमी परिप्रेक्ष्य]

[5] Dalal, J. P. (1991). India’s Foreign Policy: The Nehru Era. New Delhi: Deep & Deep Publications. (pp. 88-102). [1962 के युद्ध के दौरान कूटनीतिक पत्राचार का विवरण]

[6] Dutt, V. P. (1984). India's Foreign Policy. New Delhi: Vani Educational Books. (pp. 12-35). [गुटनिरपेक्षता के वैचारिक उद्भव का विस्तृत विवरण]

[7] Franda, M. F. (1971). Radical Politics in West Bengal. Cambridge: MIT Press. (pp. 150-162). [घरेलू राजनीति का विदेश नीति पर प्रभाव]

[8] Gaddis, J. L. (2005). The Cold War: A New History. London: Penguin Books. (pp. 175-190). [शीत युद्ध के व्यापक वैश्विक ढांचे में भारत की स्थिति]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

[9] Gopal, S. (1984). Jawaharlal Nehru: A Biography (Vol. 3). New Delhi: Oxford University Press. (pp. 210-238). [नेहरू के अंतिम वर्षों और 1962 के संकट का आधिकारिक विवरण]

[10] Heimsath, C. H., & Mansingh, S. (1971). A Diplomatic History of Modern India. Bombay: Allied Publishers. (pp. 300-325). [भारत की प्रारंभिक कूटनीति का ऐतिहासिक दस्तावेज]

[11] Jansen, G. H. (1966). Non-alignment and the Afro-Asian States. New York: Praeger. (pp. 182-205). [बांडुंग सम्मेलन और एशियाई एकता का विश्लेषण]

[12] Kashyap, S. C. (1990). Jawaharlal Nehru and the Constitution. New Delhi: Metropolitan Book Co. (pp. 45-58). [संवैधानिक मूल्यों और विदेश नीति का जुड़ाव]

[13] Levi, W. (1958). Free India's Role in World Affairs. Minneapolis: University of Minnesota Press. (pp. 110-128). [आजादी के तुरंत बाद भारत की वैश्विक सक्रियता पर शोध]

[14] Malone, D. M. (2011). Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy. Oxford: Oxford University Press. (pp. 48-72). [नेहरूवादी विरासत का आधुनिक मूल्यांकन]

[15] Martin, L. W. (1962). Neutralism and Nonalignment. New York: Praeger. (pp. 90-115). [गुटनिरपेक्षता और तटस्थता के बीच अंतर का सैद्धांतिक विश्लेषण]

[16] Maxwell, N. (1970). India's China War. London: Jonathan Cape. (pp. 250-285). [1962 के युद्ध की विवादास्पद और आलोचनात्मक व्याख्या]

[17] Nanda, B. R. (1977). Indian Foreign Policy: The Nehru Years. New Delhi: Vikas Publishing House. (pp. 140-165). [नेहरू युग के प्रमुख विदेश नीति निर्णयों का संकलन]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

Sandeep Kumar (2026). *नेहरू युग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार का विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(3), 15-28.*

[18] Power, P. F. (1964). Indian Foreign Policy: The Age of Nehru. Review of Politics, Vol. 26. (pp. 257-286). [अकादमिक लेख: नेहरू के आदर्शवाद का परीक्षण]

[19] Rana, A. P. (1976). The Imperatives of Non-Alignment. Delhi: Macmillan. (pp. 310-345). [गुटनिरपेक्षता के सुरक्षात्मक और रणनीतिक पहलुओं का विश्लेषण]

[20] Willetts, P. (1978). The Non-Aligned Movement: The Origins of a Third World Alliance. Bombay: Popular Prakashan. (pp. 55-82). [NAM के संस्थागत विकास और बेलग्रेड सम्मेलन का विवरण]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License